1. जो गुरु होयबा सहजे शीले नादे विंदे, तिंह गुरु का आलिंकार पिछाणी।
–सहजता, शीलता, शब्द ब्रह्म और जीवात्मा सम्बन्धी ज्ञान समर्थ गुरु के आभूषण है।
2. छव दरसण जिंहि कै रूपण थापण, संसार बरतण निजकर थरप्या।
–छः दर्शन उसी (परमात्मा) के रूप का वर्णन कर रहे हैं, जिसने अपने हाथों से संसार की रचना की है।
3. जिंहि कै खरतर गोठ निरोत्तर वाचा।
–केवल चर्चा के द्वारा उसकी प्राप्ति कठिन है, क्योंकि उसका पूरा स्वरूप बताने में वाणी असमर्थ है।
4. गुरु आप संतोषी अवरां पोषी, तत महारस वाणी।
–परमात्मा आनन्द स्वरूप है, वह स्वयं इच्छा रहित रहते हुए सम्पूर्ण सृष्टि का पोषण करते है।
5. के के अलिया बासण होत हुताशन, तामैं खीर दुहीजूं।
–जिस प्रकार कच्ची मिट्टी के घड़े में द्रव नहीं ठहर सकता उसी प्रकार अपरिपक्व बुद्धि के मनुष्य ज्ञान ग्रहण नहीं कर सकते।
6. गुरु ध्याईये रे ज्ञानी तोड़त मोहा। अति खुरसांणी छीजत लोहा।
–जिस प्रकार खुरसाणी पत्थर लोहे के जंग को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार गुरु प्रदत्त ज्ञान जीव के मोह को समाप्त कर देता है।
7. पांणी छल तेरी खाल पखाला, सतगुरु तोड़े मन का साला।
–सतगुरु के पास जाकर भ्रमित मन को ठीक करो, यह जीवन तो मशक के पानी के समान अनिश्चित है।
8. कोपूं न कलापूं, दुःख न सरापूं।
–परमात्मा न किसी पर कुपित होते, न किसी के दुःख का कारण बनते है। जीव अपने कर्मों का भोग करता है।
9. मोरी आद न जाणत, महीयल धूवां बखाणत।
–कहीं दूर धूंवे को देखकर अग्नि का अनुमान किया जाता है, उसी प्रकार परमात्मा की उत्पत्ति को सम्यक प्रकार नहीं जाना जा सकता।
10. सोषी कै पोषी, कै जल बिम्ब धारी।
–इस सृष्टि का पोषण और प्रलय करने वाला परमात्मा, इसमें जलबिम्ब की तरह प्रतिभासित होता है।
11. दया धर्म थापले निज बाला ब्रह्मचारी।
–इस बार परमात्मा (श्री जम्भेश्वर) स्वयं बाल ब्रह्मचारी के रूप में दया धर्म की स्थापना के लिये प्रकट हुआ हूं।
12. अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर, बाहर लोका चारूं।
–अड़सठ तीर्थ तो हृदय के भीतर है, बाहर तो केवल लोक दिखावा है।
13. नान्ही मोटी जीया जूंणी, एती सास फुरंतै सारूं।
–छोटी–बड़ी जितनी (जीया जूणी) जीव योनियां है, क्षणभर में उन सबकी सम्भल मैं (परमात्मा) कर लेता हूं।
14. आला सूका मेल्हे नाहीं, जिहिं दिश करै मुहाणों। पापे गुन्है वीहै नाहीं, रीस करै रीसाणो।
–जिस प्रकार प्रज्वलित अग्नि जिस तरफ बढ़ती है, गीली–सूखी किसी भी वस्तु को नहीं छोड़ती। उसी प्रकार क्रोधवश हुआ मनुष्य पाप–पुण्य का विचार नहीं करता।
15. अइया लो अपरंपर बाणी, म्हे जपां न जाया जीऊं।
–हे लोगों मेरी ब्रह्मवाणी है, हम पैदा हुए जीवों का जप नहीं करते।
16. नव अवतार नमो नारायण, तेपण रूप हमारा थीयूं।
–नारायण के नौ अवतार हुए हैं, वे नवों हमारे ही रूप थे।
17. भवन–भवन में एका जोती, चुन–चुन लीया रतना मोती।
–सभी बातों का सार यह है कि प्रत्येक पिण्ड और ब्रह्माण्ड में एक ही तत्व विराजमान है।
18. हिन्दू होय कै हरि क्यूं ना जंप्यो, कांय दहदिश दिल पसरायो।
–हिन्दू होकर तुमने हरि का जप क्यों नहीं किया, क्यों दशों दिशाओं में मन को फैलाकर रखा है।
19. जा दिन तेरे होम न जाप न तप न किरिया, जान कै भागी कपिला गाई।
–जिस दिन तुमने हवन, जप, तप, क्रिया कर्म नहीं किये, उस दिन ऐसा समझ कि तेरी बुद्धि रूपी कपिला गाय तेरे शरीर रूपी घर से निकल गई।

20. कूड़ तणो जे करतब कियो, ना तै लाव न सायो।
–झूठ के बल पर जो तुमने कर्म किये है, उनसे तुम्हें कोई लाभ व सहायता मिलने वाली नहीं है।
21. भूला प्राणी आल बखाणी, न जंप्यो सुररायो।
–हे भूले हुए प्राणी तुने व्यर्थ की बातें तो बहुत की पर भगवान का भजन नहीं किया।
22. छंद कहां तो बहुता भावै, खरतर को पतियायो।
–हमें मनभावनी बातें तो बहुत अच्छी लगती है पर सत्चर्चा पर विश्वास नहीं करते।
23. अति आलस भोला वै भूला, न चीन्हो सुररायो।
–हे भाई! तूं अति आलस्य और भूलावै में भूला फिरता रहा, तूने विष्णु भगवान को नहीं जाना।
24. पारब्रह्म की सुध न जाणी, तो नागे जोग न पायो।
–परब्रह्म परमात्मा की तूने खोज नहीं की। केवल नंगे रहने से कोई योगी नहीं हो सकता।
25. परसराम के अर्थ न मूवा, ताकी निश्चै सरी न कायो।
–परसराम (परमात्मा) के शरणागत होकर जो अपने अभिमान को नहीं छोड़ता, निश्चय ही उसको मुक्ति नहीं मिलती।
26. दिल साबति हज काबो नैड़े, क्या उलबंग पुकारो।
–हे मुसलमानों! यदि तुम्हारा हृदय साफ है तो हज और काबा आपके दिल में है। दिल में बसने वाले को जोर–जोर से आवाज देकर पुकारने की जरूरत नहीं है।
27. आप खुदायबंद लेखौ मांगे, रे बिन ही गुन्है जीव क्यूं मारो।
–मृत्यु उपरांत स्वयं ईश्वर कर्मों का हिसाब मांगेगा, तुम निर्दोष जीवों की हत्या क्यूं करते हो।
28. थे तक जाणों तक पीड़ न जाणों, बिन परचै बाद निवाज गुजारो।
–तुम जीवों को मारना तो जानते हो, किन्तु इससे उन्हें जो पीड़ा होती है उसे नहीं पहचानते। अत: बिना ज्ञान के तुम्हारी नमाज व्यर्थ है।
29. थे तुरकी छुरकी भिस्ती दावो, खायबा खाज अखाजूं।
–तुम जीवों को मारकर खाते हो और स्वर्ग में जाने का दावा करते हो, यह सम्भव नहीं है।
30. कांहै काजे गऊ विणासो, तो करीम गऊ क्यूं चारी।
–तुम गाय को क्यों मारते हो? परमात्मा भी गौ–सेवा करते हैं।
31. यामैं कौण भया मुरदारूं।
–इनमें मरा हुआ कौन है? मृतक जीव या मरे हुए जीव को खाने वाला?
32. जीवां ऊपर जोर करीजै, अंतकाल होयसी भारूं।
–निरीह जीवों पर अत्याचार करोगे तो तुम्हारा अन्त समय दु:खदायी होगा।
33. जिहिं कै सदकै भीना भीन, तो भेटीलो रहमान रहीम।
–संसार के विभिन्न मत–पंथों में एक ही सत्य उद्भाषित हो रहा है, जो इस बात को जान लेता है, उसे ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है।
34. दिल खोजो दरवेश भईलो, तइया मुसलमानो।
–हृदय में ईश्वर की खोज करने पर ही तुम दरवेश और सच्चे मुसलमान बन सकते हो।
35. हक हलाल पिछाण्यो नाहीं, तो निश्चै गाफल दोरे दीयो।
–अगर तुम्हारा जीवन सत्य और न्याय पर आधारित नहीं है तो निश्चय ही तुम नरक में भेजे जाओगे।
36. खरी न खाटी देह बिणाठी, थीर न पवना पारूं।
–पूर्व जन्मों के पुण्यों से मिली हुई यह मानव देही नष्ट हो रही है, इसमें प्राण सदा स्थिर रहने वाले नहीं है।
37. गुरु न चीन्हों पंथ न पायो, अहल गई जमवारूं।
–गुरु को पहचानकर उनके बताये सुपथ न चला, इसलिये तेरा सारा जीवन बेकार चला गया।
38. अहनिश आव घटंती जावै, तेरा श्वास सबी कसवारूं।
–दिनों दिन तेरी आयु घटती जा रही है, एक श्वास भी व्यर्थ नहीं खोना चाहिये।
39. जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यो, ताको लोही मांस विकारूं।
–जिन लोगों ने विष्णु मंत्र का जप नहीं किया उनका रक्त और मांस विकारी हो जायेगा।

40. जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यो, गांवै गाडर सहरे सूअर जन्म जन्म अवतारूं।
–जिन लोगों ने विष्णु मंत्र का जप नहीं किया, वे गांवों में भेड़ और शहरों में सूअर की योनियों में बार–बार जन्म लेते है।
41. जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यो, ते न उतरिबा पारूं।
–जिन लोगों ने विष्णु मंत्र का जप नहीं किया, वे भवसागर से पार नहीं उतर सकते।
42. तातै तंत न मंत न जड़ी न बूंटी, ऊंडी पड़ी पहारूं।
–अगर तूनें भगवान का स्मरण नहीं किया तो अन्त समय में तूं गहरे संकट में पड़ जाएगा, उस समय तंत्र–मंत्र, जड़ी–बूटी कुछ भी काम नहीं आयेंगे।
43. विष्णु को दोष किसो रे प्राणी, तेरी करणी का उपकारूं।
–कर्मफल भोग करते समय भगवान को दोष नहीं देना चाहिये, ये तेरे स्वयं के किये हुए कर्मो का ही फल है।
44. मोरा उपख्यान वेदूं कण तत भेदूं, शास्त्रे पुस्तके लिखणा न जाई।
–मेरा कथन वैदिक ज्ञान है, जो आत्म तत्व का भेद बताता है। सम्यक प्रकार से उस तत्व का स्वरूप शास्त्रों और पुस्तकों में नहीं लिखा जा सकता।
45. मेरा सबद खोजो, ज्यूं सबदे सबद समाई।
–परमतत्व को प्राप्त करने के लिये उसे मेरे सबदों में खोजो।
46. ओछा कबही न पूरूं, कागण का जाया कोकला न होयबा।
–ओछी मानसिकता वालों से कभी उत्तम कार्य नहीं हो सकता। कौवी से कभी कोयल का जन्म नहीं हो सकता।
47. कृष्ण चरित बिन, बुगली न जनिबा हंसूं।
–बुगले के घर पर कभी हंस का जन्म नहीं हो सकता, पर भगवान की कृपा हो जाये तो मनुष्य हीन वृत्ति त्यागकर शुद्ध बन सकता है।
48. ज्ञानी के हृदय प्रमोद आवत, अज्ञानी लागत डांसूं।
–सत्चर्चा सुनकर ज्ञानी के हृदय में तो खुशी होती पर अज्ञानी को यह बुरी लगती है।
49. सुरमा लेणा झीणां सबदूं, म्हे भूल न भाख्या थूलूं।
–मेरी वाणी प्रतिश्वास शब्द–ब्रह्म का बखान कर रही है, हम भूल कर भी मिथ्या–भाषण नहीं करते।
50. सोपति बिरखा सींच प्राणी, जिंह का मीठा मूल समूलूं।
–जैसे वर्षा सभी प्राणियों को तृप्त कर देती, वैसे अपने व्यवहार से सभी को सुख पहुंचायो। मीठे फल देने वाले धर्म रूपी वृक्ष का सदैव सिंचन करो।
51. पाते भूला मूल न खोजै, सींचो कांय कुमूलूं।
–बाहरी दिखावे में भूला हुआ जीव मूल तत्व की खोज नहीं करता। भ्रमित जीव ही अशुभ कर्मो का उपार्जन करता है।
52. विष्णु–विष्णु भण अजर जरीजै, यह जीवन का मूलूं।
–काम क्रोधादि को वश में करके भगवान विष्णु का जप करना, यही जीवन का मूल कर्त्तव्य है।
53. खोज प्रांणी ऐसा विनाणी, केवल ज्ञानी, ज्ञान गहीरूं जिंह के गुणे न लाभत छेहूं।
–मूल तत्व की प्राप्ति हेतु हे प्राणी! तूं इसके जानने वाले विज्ञानी, कैवल्य ज्ञानी, ज्ञान–गम्भीर और अनन्त गुणवान पुरुष की खोज कर।
54. गुरु गेवर गरवा शीतल नीरूं, मेवा ही अति मेऊं।
–गहर–गम्भीर महिमावन्त सद्गुरु अपने जिज्ञासु शिष्यों को ज्ञान रूपी शीतल जल, मीठे मेवे प्रदान करता है।
55. हिरदै मुक्ता कमल संतोषी, टेवा ही अति टेऊं।
–गुरु जीवनमुक्त, संतोषी अन्त:करण वाला और आश्रितों का परम आश्रय है।
56. चढ़कर बोहिता भवजल पार लंघावै। सो गुरु खेवट खेवा खेहूं।
–असली गुरु तो वही है जो अपनी कृपा रूपी नौका में तुझे बैठाकर इस भवसागर से पार लंघा दे।
57. लोहा नीर किसी बिध तरिबा, उत्तम संग सनेहूं।
–सत्संगति मनुष्य को पार उतार सकती है जिस प्रकार लकड़ी में लगा हुआ लोहा नदी में तैर जाता है।
58. तइया सासूं, तइया मांसूं, रक्तू रूहीयूं। खीरूं, नीरूं, ज्यूं कर देखूं।
–प्राणवायु, मांस, रक्त और जीवात्मा सब में एक जैसी है। पानी में मिले हुए दूध की भांति सभी जीव आत्मा के रूप में एक–दूसरे से अभिन्न है।
59. ज्ञान अंदेसूं, भूला प्राणी कहै सो करणो।
–दुविधा ग्रस्त जीव किसी प्रकार का निर्णय करने में असमर्थ रहता है, इसलिये उसे मैं जो कहता हूँ उसे वैसा ही करना चाहिये।
60. अइ अमाणो, तत समाणो।

–अरे! जो अहंकार रहित होता है, वही आत्म–तत्व को जान सकता है।

61. अइया लो म्हे पुरूष न लेणा नारी, सोदत सागर सो सुभ्यागत।

–आत्म तत्व के परिपेक्ष्य में स्त्री–पुरूष का कोई भेद नहीं है। जो आत्मतत्व की खोज करता है, वही सौभाग्यशाली है।

62. भीखी लो भिखियारी लो, जे आदि परमतंत लाधो।

–अगर तुम्हें परमतत्व की प्राप्ति करनी है तो, जैसे भीखारी भीख मांगता, उस प्रकार विनम्र बनकर व मानापमान को त्यागकर सत्पुरूष के सामने भिक्षुक बनना पड़ेगा।

63. जाकै वाद विराम विरांसो सांसौ, तानै कौन कहसी साल्हिया साधो।

–वाद–विवाद में उलझे हुए, अशांत, संशयग्रस्त व्यक्ति को सच्चा साधक कौन कहेगा।

64. जां कुछ–जां कुछ तां कुछ न जांणी, ना कुछ–ना कुछ ता कुछ जाणी।

–ब्रह्म के विषय में कोई जानने का दावा करता है तो वह कुछ नहीं जानता, इस विषय में जो मौन है, समझो वह कुछ जानता है।

65. ना कुछ–ना कुछ अकथ कहाणी, ना कुछ–ना कुछ अमृत वाणी।

–सभी शास्त्र ब्रह्म के विषय में नेति–नेति कहते हैं, यहां तक कि वेद भी उसका स्वरूप निरूपण करने में असमर्थ है।

66. मरणत माघ संघारत खेती, के के अवतारी रोवत राही।

–सभी का मृत्यु मार्ग पर जाना निश्चित है, फिर भी कुछ दुष्टों का पाप अधिक बढ़ जाता है तो अवतार लेकर भगवान अपने सृजित जीवों का दु:खी मन से संहार करते हैं।

67. जड़िया बूंटी जे जग जीवै, तो बैदा क्यूं मर जाही।

–मृत्यु अनिवार्य है, इसके आने पर किसी प्रकार की औषधि और इसके जानने वालों (वैद्यों) का भी जोर नहीं चलता।

68. खोज पिरांणी ऐसा बिनाणी, नुगरा खोजत नाही।

–हे प्राणी! तूं ऐसे तत्व की खोज कर जो मृत्यु से परे है पर अज्ञानी लोग ऐसा प्रयास नहीं करते।

69. जां कुछ होता ना कुछ होयसी, बल कुछ होयसी तांही।

–अजर–अमर परमात्मा की उपस्थिति में सृष्टि का सृजन, प्रलय और फिर सृजन का चक्र चलता रहता है।

70. रूप अरूप रमूं, पिण्डे ब्रह्मण्डे, घट–घट अघट रहायो।

–मैं (परमात्मा) साकार और निराकार दोनों ही रूपों में पिण्ड और ब्रह्माण्ड में रमण कर रहा हूँ। घट–घट में मेरा ही रूप व्याप्त है।

71. अनन्त जुगां में अमर भणीजूं, ना मेरे पिता न मायो।

–अनन्त युग बीतने पर भी मेरे स्वरूप में परिवर्तन नहीं होता। मैं स्वयंभू हूँ, मेरा सृजन करने वाला कोई नहीं है।

72. जहां चीन्हो तहां पायो।

–जिसने भी परमात्मा की खोज की है, उसे वह अवश्य मिला है।

73. अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर, कोई–कोई गुरुमुख बिरला न्हायो।

–ईश्वर प्राप्ति के लिये तीर्थों में जाना आवश्यक नहीं है, उसे अपने हृदय में खोजना पड़ता है। इस भेद को कोई विरले ही गुरुमुखी लोग जानते है।

74. जां–जां दया न मया, तां–तां विकरम कया।

–जिन लोगों के हृदय में दया और प्रेमभाव नहीं है, उनके सभी कर्म दूषित है।

75. जां–जां आव न बैसूं, तां–तां सुरग न जैसूं।

–जिनके मन में दूसरों के प्रति आदर–सत्कार का भाव नहीं है, उन्हें स्वर्ग नहीं मिल सकता।

76. जां–जां जीव न जोती, तां–तां मोख न मुक्ति।

–जो प्रत्येक जीव में भगवान के दर्शन नहीं करता, उसे मुक्ति नहीं मिल सकती।

77. जां–जां पाले न शीलूं, तां तां कर्म कुचीलूं।

–जो शील का पालन नहीं करते, उनके सभी कर्म बुरे है।

78. जां–जां खोज्या न मूलूं, तां–तां प्रत्यक्ष थूलूं।

–जिसने अपने हृदय में स्थित आत्मतत्व की खोज नहीं की, उनका ज्ञान थोथा है।

79. जां–जां भेद्या न भेदूं, तो सुरगे किसी उमेदूं।

–जिसने अद्वैत ब्रह्म के स्वरूप को नहीं जाना, उसको स्वर्ग प्राप्ति की आशा नहीं करनी चाहिये।

80. जां-जां घमण्डै स घमण्डूं, ताकै ताव न छायो, सूतै सास नसायो।
-जो अहंकार के मद में चूर है, जिसे भले-बुरे का ज्ञान नहीं है, उसका सारा जीवन व्यर्थ चला गया।
81. जिहिं कै सार असारूं, पाप अपारूं, थाघ अथाघूं, उमग्या समाघूं।
-इस संसार में एक परमात्मा ही सार तत्व है, जिसका सार व थाह पाना मुश्किल है। उसकी प्राप्ति के मार्ग पर चलना आनन्द प्रदान करने वाला है।
82. गगन पयाले, बाजत नादूं, माणक पायो, फेर लुकायो, नहीं लखायो।
-मनुष्य के अन्दर सबद-ब्रह्म का अनाहत नाद गूंजता रहता है, वहीं आत्म-ज्योति प्रकाशित है, पर ये छुपे हुए है। साधना के बिना इसका अनुभव नहीं किया जा सकता।
83. दुनियां राती वाद विवादूं, वाद विवादे दाणूं खीणा।
-दुनियां वाद-विवाद में लगी हुई है, वाद-विवाद से तो अनेक शक्तिशाली दानव भी नष्ट हो गये।
84. सोई उत्तम लेरे प्राणी, जुगां जुगांणी सत करि जांणी।
-हे प्राणी! तूं ऐसे तत्व को ग्रहण कर जो अनन्त युगों तक स्थिर रहता है।
85. ताकै ज्ञान न जोती, मोक्ष न मुक्ति। याके कर्म इसायो, तो नीरे दोष किसायो।
-जिनके हृदय में ज्ञान-ज्योति प्रज्ज्वलित नहीं है, उनको मुक्ति नहीं मिल सकती। उनके कर्म ही ऐसे है, इसमें किसी का दोष नहीं है।
86. साहिल्या हुवा मरण भय भागा, गाफिल मरणै घणा डरै।
-जो सच्चा साधक है, उसको मृत्यु का भय नहीं है। अज्ञानी पुरूष मौत से बहुत डरता है।
87. रतन काया सोभंती लाभै, पार गिरायै जीव तिरै।
-अमूल्य आत्मतत्व की प्राप्ति होने पर जीव मुक्त हो जाता है।
88. पार गिरायै सनेही करणी।
-यदि अपना भला चाहते हो तो दूसरों के प्रति भलाई करो।
89. जपो विष्णु न दोय दिल करनी। जपो विष्णु न निंदा करनी। मांडो कांध विष्णु कै सरणै।
-पर निंदा और दुविधा-वृत्ति का त्याग करके एकमात्र विष्णु के शरण होकर उनका स्मरण कर।
90. अतरा बोल करो जे साचा, तो पार गिराय गुरु की वाचा।
-मैं जो कहता हूँ अगर तुम सत्य में उस पर चलते हो तो मैं तुम्हें उद्धार का वचन देता हूँ।
91. रवणा ठवणा चवरां भवणां, ताहि परे रै रतन काया छै, लाभै किसे विचारे।
-चौदह भवन का ऐश्वर्य भी आत्मतत्व की प्राप्ति में सहायक नहीं हो सकता है, वह इनसे परे की चीज है।
92. जे नवीये नवणी, खवीये खवणी, जरिये जरणी, करिये करणी। तो सीख हुवा घर जाइये।
-जो विनम्र है, क्षमावान है, काम क्रोधादि जिसके वश में है, जो सत्कार्य करता है और जो सद्गुरु की आज्ञा में चलता है, उसे परम गति मिलती है।
93. गुरु प्रसादे केवल ज्ञाने, धर्म अचारे, शीले संजमे, सतगुरु तूठे पाइये।
-शिष्य के धर्माचरण से, शील और संयम के पालने तथा सेवा से संतुष्ट होकर सद्गुरु उसे कैवल्य ज्ञान (आत्म तत्व) प्रदान करते है।
94. आसण बैसण कूड़ कपटण, कोई-कोई चीन्हत वोजूं बाटे।
-साधना-पथ सहज है, गुरु गद्दी पर बैठकर झूठ और कपट का सहारा लेने वाले इसे नहीं पा सकते है, इस सहज पथ को तो कोई विरला ही पहचानता है।
95. वोजूं बाटे जे नर भया, काची काया छोड़ कैलाशे गया।
-जो इस सहज पथ पर चलते है, वे नश्वर शरीर को छोड़कर मोक्ष प्राप्त करते है।
96. राज न भूलीलो राजेन्द्र, दुनी न बंधो मेरू। पवना झौले बीखर जैला, धुंवर तणा जै लोरूं।
-धन ऐश्वर्य के अहंकार में पड़कर इस दुनिया में मत फंसो। गहरी छाई हुई धुंध हवा के एक झौंके से बिखर जाती है। ऐसे ही आपका यह वैभव एक पल में चला जाएगा।
97. आडा डम्बर केती वार विलम्बण, यो संसार अनेहूँ।
-जैसे बादल आकाश में प्रकट और विलिन होते रहते हैं, ऐसे ही यह संसार भी अस्थिर है, इसके मोह में फंसना नहीं चाहिये।

98. भूला प्राणी विष्णु जपो रे मरण विसारो केहूं।
–हे प्राणी! विष्णु का जप करो, तुम मृत्यु को क्यों भूल गये हो।
99. म्हां देखता देव दाणूं सुर नर खीणा, जंबू मंझे राचि न रहिबा थेहूं।
–हमारे देखते–देखते देव–दानव, सुर–नर सब चले गये, इस संसार में कोई स्थिर नहीं है।
100. नदिये नीर न छीलर पाणी, धूंवर तणा जे मेहूं।
–ओस का पानी बरसता हुआ तो प्रतीत होता है, पर उससे नदी–तालाब नहीं भर सकते, उसी प्रकार मात्र दिखावा करने से कुछ प्राप्त होने वाला नहीं है।
101. घण तण जीम्यां को गुण नांहि, मल भरिया भण्डारूं।
–आवश्यकता से अधिक खाने से कोई लाभ नहीं है, इससे तो शरीर में मल की वृद्धि ही होती है।
102. घणा दिनां का बड़ा न कहिबा, बड़ा न लंघिबा पारूं।
–बड़ी उम्र वाला गुणहीन व्यक्ति बड़ा नहीं कहा जा सकता और न ही वो पार उतर सकता है।
103. उत्तम कुली का उत्तम न होयबा, कारण किरिया सारूं।
–श्रेष्ठ कुल में जन्म लेने मात्र से ही कोई श्रेष्ठ नहीं बन जाता। इसमें कर्म ही प्रधान है।
104. गोरख दीठा सिद्ध न होयबा, पोह उतरबा पारूं।
–महापुरूष के देखने मात्र से तुम्हें सिद्धी नहीं मिल सकती, इसके लिये तुम्हें उनके बताये मार्ग पर चलना होगा।
105. कलयुग बरतै चेतो लोई, चेतो चेतण हारूं।
–कलियुग के इस विषम काल में आयु शीघ्रता से समाप्त हो रही है, इसलिये हे जागरूक प्राणी! सचेत, सावधान हो जाओ।
106. पढ़ कागल वेदूं शास्त्र सबदूं, पढ़ सुन रहिया कछु न लहिया।
–यदि किसी ने वेद, शास्त्रों और ज्ञान–वचनों को पढ़ा, विद्याध्यन भी किया पर उस पर चिन्तन–मनन नहीं किया तो उसे कुछ भी हासिल नहीं होगा।
107. ज्ञाने ध्याने नादे वेदे जे नर लेणा, तत भी ताही लीयो।
–जो व्यक्ति ज्ञान, ध्यान और अपने अन्तर की आवाज की साधना करता हुआ आत्मचिन्तन करता है, तत्व की प्राप्ति उसे ही होती है।
108. करण, दधीच, सिव र बलिराजा, हुई का फल लियो।
–मनुष्य को अपने कर्मो का फल अवश्य मिलता है। कर्ण, दधीचि, राजा शिवि और राजा बलि के महान कार्यों के फलस्वरूप उनकी कीर्ति आज तक व्याप्त है।
109. तारादे रोहितास हरिचन्द, काया दसबन्ध दीयो।
–महाराज हरिश्चन्द्र, महारानी तारादे और राजकुमार रोहितास ने परोपकार के लिये अपना शरीर ही दान में दे दिया।
110. विष्णु अजप्यां जनम अकारथ, आके डोडा खींपे फलीयो।
–विष्णु के जप–स्मरण के बिना मनुष्य का जन्म उसी प्रकार व्यर्थ है, जैसे आक के फल और खींप की फलियां किसी काम नहीं आती।
111. नानारे बहु रंग न राचै काली ऊंन कुजीऊं।
–दुष्ट बुद्धि का व्यक्ति अच्छी बात को ग्रहण नहीं करता, जैसे काले रंग की ऊन पर कोई दूसरा रंग नहीं चढ़ता।
112. देखत अन्धा सुणता बहरा, तासो कछु न बसाई।
–अनजान को तो कोई बात समझाई जा सकती है पर जो देखते हुए भी नहीं देखना चाहता और सुनते हुए हुए भी नहीं सुनना चाहता, उनका कोई उपाय नहीं है।
113. परम तंत है ऐसा, आछै उरबार न ताछै पारूं।
–परमतत्व अगम्य है, उसका आर–पार नहीं पाया जा सकता।
114. मीन का पंथ मीन ही जांणै, नीर सुरंगम रहीयूं।
–मछली का मार्ग मछली ही जान सकती है क्योंकि वह जल में रहती है। इसी प्रकार परम तत्व में आत्मसात हुए बिना उसे जाना नहीं जा सकता।
115. सिध का पंथ साधू जाणत, बीजा बरतन बहियो।
–परमात्मा को प्राप्त करने का उपाय कोई साधक ही जानता है बाकी तो सांसारिक क्रियाकलापों में रत है।

116. अनन्त कोड़ गुरु की दावण विलम्बी, करणी साच तरीलो।
–अनन्त करोड़ लोग गुरु आज्ञा को शिरोधार्य करके, सत्कर्म करते हुए पार उतर गए।
117. भगवीं टोपी थलसिर आयो, हेत मिलाण करीलो।
–मैं भगवीं टोपी पहनकर साधु के वेष भी इस धरती पर आया हूँ। मेरा यहां आने का हेतू बिछुड़े हुए जीवों का परमात्मा से मिलन करवाना है।
118. अम्बाराय बधाई बाजै, हृदय हरि सिंवरीलो।
–सर्वत्र भगवान की महिमा प्रकाशित हो रही है। भगवान की कृपा के लिये हर्षित होते हुए उसका निरन्तर स्मरण करो।
119. कृष्ण मया चोखंड किरसांणी, जम्बूदीप चरीलो।
–सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का रचयिता भगवान है, ऐसा भाव रखकर इस पृथ्वी पर विचरण करो।
120. ऊंनथ नाथ कुपह का पोहमा आंण्या, पोह का धुर पहुंचायो।
–मैंने (गुरु जाम्भोजी) उदण्ड लोगों को शिक्षा देकर सुमार्ग पर लगाया है। सुमार्ग पर चलने के बाद ही मुक्ति संभव होती है।
121. मौरे धरती ध्यान वनस्पति वासो, ओजूं मंडल छायो।
–यह धरती मेरे ध्यान में है, पेड़–पौधे आदि वनस्पति में मेरा वास है। आकाश तक सर्वत्र में ही छाया हुआ हूँ।
122. कण बिन कूकस कांय पीसो, निश्चै सरी न कायो।
–अन्नरहित अपशिष्ट को कूटने से अन्न नहीं प्राप्त होता। व्यर्थ के कार्य करने से निश्चय ही तुम्हें लाभ नहीं होगा।
123. जो ज्यूं आवै सो त्यूं थरप्या, साचा सूं सत भायो।
–भाव के अनुसार ही फल प्राप्ति होती है। सत्यवादी भगवान को प्रिय है।
124. सुकरत साथ सगाई चालै।
–मरने के बाद सत्कर्म ही साक्षी के रूप में मनुष्य के साथ चलते हैं।
125. इहि खोटे जन मन्तर स्वामी, अहनिश तेरो नाम जपंतो।
–मरणोपरांत अपनी दुर्गति देखकर जीव कहता है कि अगर मुझे मनुष्य शरीर की अमूल्यता का पता लग जाता तो मैं दिन–रात भगवान का स्मरण करता।
126. सुरपति साथ सुरासुरंग, सुरपति साथ सुरासुंग मेलो, निज पोह खोज ध्याइये।
–सच्चे और श्रेष्ठ लोगों से भगवान प्रसन्न होते है। ऐसे ही लोग भगवान को प्राप्त करते हैं। इसलिये सत्मार्ग की खोज करो और उस पर चलो।
127. गुरुमुख पवन उडाइये, पवणा डोले तुस उडैलो।
–समर्थ गुरु अपने शिष्य के अज्ञान को इस प्रकार हटा देता है जैसे कचरा मिश्रित अन्न को हवा में उछालने पर हवा कचने को उड़ा देती है।
128. यूं क्यूं भलो जे आप न जरिये, औरां अजर जराइये।
–काम क्रोधादि विकारों को जो स्वयं वश में नहीं कर सका, दूसरों को वह इसका उपदेश देने का अधिकारी नहीं है।
129. पहले किरिया आप कमाइये तो औरां न फरमाइये।
–पहले स्वयं को कोई कार्य करना चाहिये, तब ही दूसरों को उसको करने के लिये कहना चाहिये।
130. जो कुछ कीजै मरणै पहले, मत भल कहि मर जाइये।
–शुभकर्म शीघ्रता से कर लेने चाहिये, पता नहीं कब मृत्यु आकर दबोच ले।
131. शील बिबरजीत जीव दुहेलो, यमपुरी ये सताइये।
–जिसके जीवन में शील नहीं है उसे इस जीवन में भी दु:ख उठाना पड़ेगा और मरने के बाद नरक प्राप्त होगा।
132. रतनकाया मुख सूवर बरगो, अबखल झंखे पाइये।
–अमूल्य मानव शरीर जिसमें जीवात्मा का वास है, उसे पाकर जो मुंह से व्यर्थ बकवाद करते हैं, तो गन्दगी में मुंह मारने वाले सुअर और उन में क्या अन्तर है।
133. निज पोह पाखो पार असी पुर, जाणी गीत विवाहे गाइये।
–परमात्मप्राप्ति के अपने लक्ष्य को पहचाने बिना मानव के सभी कर्म विवाह में गाए जाने वाले गीतों के समान असार है।
134. भरमी भूला वाद–विवाद, आचार–विचार न जाणत स्वाद।

–लोग भ्रमित होकर वाद–विवाद में उलझे रहते हैं, वे शुद्ध आचरण और पवित्र विचारों के उत्तम फल को नहीं जानते।

135. कीरत के रंग राता मुरखा मन हठ मरै, ते पार गिराये कित उतरै।

–संसार में केवल यश प्राप्ति ही जिनका लक्ष्य है, वे मनहठी और मूर्ख है। वे पार कैसे उतर सकते हैं?

136. भल मूल सींचो रे प्राणी, ज्यूं का भल बुद्धि पावै। जामण–मरण भव काल जु चुकै तो आवागवण न आवै।

–मूल तत्व (परमात्मा) का स्मरण करना चाहिये, जिससे बुद्धि पवित्र होती है और आवागमन से छुटकारा मिल जाता है।

137. हरि परिहरि की आण न मानी, झंख्या झूल्या आलूं।

–परमात्मा की अवज्ञा करके तुमने उनकी मर्यादा को नहीं माना, संसार में व्यर्थ ही बकवाद करता हुआ भटकता रहा।

138. देवा सेवा टेव न जाणी, न बंच्या जम कालूं।

–अगर तुमने सत्पुरूषों की संगति न की तो तुम्हें यमपाश से बचने का उपाय कौन बताएगा?

139. भूलै प्राणी विष्णु न जंप्यो, मूल न खोज्यो, फिर–फिर जोया डालूं।

–हे भूले हुए प्राणी! तुमने सांसारिक सुखों की प्राप्ति का प्रयत्न तो किया पर भगवान का भजन और मूल तत्व (परमात्मा) की खोज नहीं की।

140. जीव र पिंड बिछोड़ो होयसी, ता दिन थाक रहै सिर मारूं।

–मृत्यु के समय जब जीव इस शरीर से बिछुड़ेगा, तब तेरा कुछ भी वश नहीं चलेगा।

141. जां जां वाद विवादी अति अहंकारी लबद सवादी, कृष्ण चरित बिन नाहिं उतरिबा पारूं।

–जो अति वाद–विवाद और अहंकार करते हैं, नैत्रों और जीव्हा पर जिनका वश नहीं है, बिना भगवान की कृपा के उनका उद्धार सम्भव नहीं है।

142. कवण न हूवा कवण न होयसी, किण न सहया दु:ख भारूं।

–यह संसार दु:खालय है। यहां ऐसा कौन हुआ है और कौन होगा जिसने दु:ख सहन नहीं किया है।

143. कवण न गइया कवण न जायसी, कवण रहया संसारूं।

–यह संसार चलायमान है। यहां सदा रहने के लिये कोई नहीं आता।

144. भूली दुनिया मर मर जावै, न चीन्हों करतारूं।

–भारी भूल में पड़ी हुई दुनियां जन्मती है और मरती है पर परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयास नहीं करती।

145. विष्णु–विष्णु तूं भण रे प्राणी, बल–बल बारम्बारूं।

–हे प्राणी! तूं विष्णु का जप कर। निरन्तर और बार–बार उनका ही स्मरण कर।

146. कसणी कसबा भूल न बहबा, भाग परापति सारूं।

–कर्म पूरी लग्न और सावधानी के साथ करने चाहिये, क्योंकि कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्ति होती है।

147. फोकट प्राणी भरमे भूला, भल जे यो चीन्हों करतारूं।

–व्यर्थ में ही भ्रम में पड़े हुए लोगों के द्वारा कभी परमात्मा की प्राप्ति नहीं की जा सकती।

148. खेत मुक्त ले कृष्ण अर्थो। जे कंध हरै तो हरियो।

–भगवदार्पण कार्य में मरना उत्तम है।

149. विष्णु जपन्ता जीभ जु थाकै, तो जीभड़ियां बिन सरियों।

–भगवान का नाम जप करते हुए यदि जीभ थकती है, तो ऐसी जीभ के बिना भी काम चल सकता है।

150. हरि–हरि करता हरकत आवै, तो ना पछतावो करियो।

–नाम स्मरण करते हुए यदि बाधाएं आती है तो पछतावा नहीं करना चाहिये।

151. भीखी लो भिखियारी लो जे आदि परमतत लाधो।

–परमतत्व की प्राप्ति के इच्छुक को मानापमान में सम रहना चाहिये।

152. बल बल भणत व्यासूं। नाना अगम न आसूं।

–व्यास आदि विद्वान ऋषि मुनि परमतत्व के स्वरूप का बार–बार वर्णन करते हैं, किन्तु उसको अगम्य जानकर नेति–नेति कह उठते हैं।

153. नाना उदक उदासूं। बल बल भई निरासूं।

–परमतत्व अत्यन्त गूढ़ है, इसकी थाह पाने वालों को निराश होना पड़ता है।

154. गल में पड़ी परासूं। जां जां गुरु न चीन्हों।
–समर्थ गुरु के बिना गले में पड़ी यमपाश से कौन छुड़ा सकता है।
155. तइया सींच्या न मूलूं। कोई कोई बोलत थूलूं।
–परमतत्व की प्राप्ति के बिना जो इसके बारे में कथन कहते है, वे मिथ्याभाषण करते हैं।
156. रे रे पिंड स पिंडू। निरधन जीव क्यूं खंडू।
–अरे भाई! जैसे तुझे अपना शरीर प्यारा है, वैसे अन्य जीवों को भी है, फिर तुम निर्दयता से क्यों जीव हत्या करते हो?
157. उत्तम संग सुसंगू। उत्तम रंग सुरंगू।
–सत्संगति ही उत्तम संगति है, आत्मज्ञान का रंग ही उत्तम रंग है।
158. उत्तम लंग सुलंगू। उत्तम ढ़ंग सुढ़ंगू।
–संसार–सागर को लांघना ही उत्तम लांघना है, मुक्ति का उपाय ही उत्तम उपाय है।
159. सहज सुलीलूं। सहज सुपंथूं। मरतक मोक्ष दवारूं।
–आत्मतत्व की प्राप्ति का मार्ग सहज ही आनन्ददायी है, इस पर चलने वाले मरणोपरान्त मोक्ष की प्राप्ति करते हैं।
160. तइया सांसू तइया मांसू। तइया देह दमोई। उत्तम मध्यम क्यूं जाणीजै? बिबरस देखो लोई।
–सबके वही श्वास है, वही मांस है, वही देह, वही प्राण है, फिर किसी को उत्तम और किसी को नीच क्यों समझते हो?
161. दिल दिल आप खुदायबंद जाग्यो। सब दिल जाग्यो सोई।
–प्रत्येक के दिल में परमात्मा का वास है, सब के हृदय में भगवद्–ज्योति प्रकाशित है।
162. नाम विष्णु कै मुसकल घातै। ते काफर सैतानी।
–जो लोग परमात्मा के नाम–जप में बाधाएं डालते हैं वे काफिर और शैतान है।
163. रण मध्ये से नर रहियो। ते नरा अडरा डरूं।
–जो आत्मस्थ होकर सभी प्रकार की कठिनाइयों, बाधाओं में अडिग रहता है, वह निश्चय ही मृत्यु के डर को पार कर जाता है।
164. ज्ञान खड़गूं जथा हाथे। कोण होयसी हमारा रिपूं।
–ज्ञान रूपी तलवार से काम क्रोधादि शत्रुओं का संहार करो, जिसके हाथ में ज्ञान की तलवार है उसका कोई शत्रु नहीं हो सकता।
165. कर कृसाणी बेफायत संठो। जो जो जीव पिंडे नीसरणा।
–मनुष्य को व्यर्थ के कामों में समय बर्बाद न करके सार–संचयन करना चाहिये, पता नहीं कब जीव शरीर को छोड़कर निकल जाए।
166. सुरां पुनां तेतीसां मेलो। जे जीवन्ता मरणो।
–जीवन मुक्त पुरूषों को ही देवताओं का आश्रय और तेतीस करोड़ जीवों का साथ प्राप्त होता है।
167. बादीलो अहंकारीलो। वै भार घणा ले मरणो।
–जो हठी और अहंकारी है वे पापों का बोझ लेकर मरेंगे।
168. मिनखा रै ते सूतै सोयो खूलै खोयो। जड़ पाहन संसार बिगोयो।
–हे मनुष्य! तुमने मनमाना आचरण करते हुए आलस्यवश होकर सोते हुए सारा जीवन खो दिया।
169. निरफल खोड़ भिरांति भूला। आस किसी जा मरणो।
–तूं भ्रमवश इस संसार रूपी वीरान जंगल में किस आसा से भटक रहा है, यहां तो मृत्यु अवश्यम्भावी है।
170. निश्चै छेह पड़ेलो पालो। गोवलवास जू करणो।
–इस संसार से जाते समय निश्चित ही तूं अकेला पड़ जाएगा। यह जगत गोवलवास के समान स्थिर नहीं है।
171. गोवलवास कमाय ले जिवड़ा, सो सुरगा पुर लहणा।
–जो इस संसार को अस्थिर समझकर मोहरहित होकर शुभ कर्म करते है उन्हें सद्गति प्राप्त होती है।
172. कुपात्र कू दान जु दीयौ। जाणै रैण अंधेरी चोर जु लीयो।
–कुपात्रों को दिया हुआ दान, अंधेरी रात में चोरों द्वारा चुराई गई वस्तु के समान है।
173. दान सुपाते बीज सुखेते। अमृत फूल फलीजै।
–सुपात्रों को दिया गया दान उन बीजों के समान है जो उपजाऊ खेतों में बोए जाकर अमृत के समान फल देते है।
174. काया कसोटी मन जो गूंटो। जरणा ढ़ाकण दीजै।

–शरीर को ज्ञान की कसौटी पर कसकर मन को जोगी बनाओ तथा काम क्रोधादि को वश में करो।
175. थोड़े माहिं थोड़ेरो दीजै। होते नाह न कीजै।
–यदि पास में थोड़ी वस्तु है तो उसमें से थोड़ी दे देनी चाहिये पर होते हुए ना नहीं करनी चाहिये।
176. जोय–जोय नाम विष्णु के बीजै। अनन्त गुणा लिख लीजै।
–जो वस्तु निष्काम भाव से भगवदार्पण करके दी जाती है, वह अनन्त गुणा फलित होती है।
177. घट ऊंधै बरसत बहु मेहा। नीर थयो पण ठालूं।
–यदि तत्वप्राप्ति के प्रयास उल्टे है तो सिद्धि नहीं मिल सकती जैसे औंधे घड़े पर भारी बरसात होने पर भी वह खाली रहता है।
178. जपिया तपिया पोह बिन खपिया। खप खप गया इवांणी।
–सुपथ पर न चलकर मनमुखी जप–तप करने वाले नष्ट हो जाते है, तत्वप्राप्ति नहीं होती।
179. तउवा दान जू कृष्णी माया। और भी फूलत दानों।
–भगवान की कृपा का दान मिल जाये तो उसके समान फलित होने वाला कोई दूसरा दान नहीं है।
180. तेऊ पार पहूंता नाही। ते कीयो आपो भांणो।
–वे पार नहीं पहुंच सकते जिन्होंने अपने सामर्थ्य का अहंकार किया है।
181. पहलू प्रहलादा आप पतलीयो, दूजा काजै काम बिटलीयो।
–भीषण कष्ट सहकर पहले प्रहलाद ने अपने को प्रमाणित किया, फिर वे दूसरों के उद्धारक बने।
182. पढ़ कागल वेदूं शास्त्र सबदूं। भूला भूले झंख्या आलूं।
–अनेक पुस्तकों और वेद–शास्त्रों को पढ़कर तथा ज्ञान–कथन सुन पढ़कर भी तूं व्यर्थ की बातें करता है और झूठ बोलता है इससे बड़ी भूल और क्या हो सकती है।
183. अहनिश आव घटंती जावै। तेरा सास सबी कसवारूं।
–दिन–रात तेरी आयु घटती ही जाती है, एक सांस की देरी करना भी अब ठीक नहीं है।
184. एक दु:ख लक्ष्मण बंधु हइयो। एक दुख बूढ़े घर तरणी अइयो।
–लक्ष्मण जैसे भाई से वियोग और बूढ़े आदमी के तरूण स्त्री का होना बड़े दु:ख का कारण है।
185. एक दुख बालक की मां मुइयो। एक दुख औछे को जमवारूं।
–बच्चे की मां मर जाना उसके लिये दु:ख है। हीन, नीच प्रकृति वाले ओछे व्यक्ति का जीवन दु:ख का कारण है।
186. बिखा पटंतर पड़ता आया। पूरस पूरा पूरूं।
–जो महान बने है उन्होंने भी दु:ख सहे है, इसलिये दुख से विचलित नहीं होना चाहिये।
187. जे रिण राहे सूर गहीजै। जे सुरज सुरा सूरूं।
–युद्धक्षेत्र में यदि शूरवीर कैद कर लिया जाए तो भी उसकी शूरवीरता कम नहीं होती। धर्मी आपत्तिकाल में भी धर्म को नहीं छोड़ते।
188. दुखिया है जे सुखिया होयसै। करसै राज गहीरूं।
–दु:ख में धैर्य रखने वाले बाद भी सुखी भी होते है तथा राज भी भोगते है।
189. इतना मोह न माने शिंभु। तही तही सूसीरूं।
–जो पुरूष संसार के सुख–दुख में एक समान रहता है उसे ही परमात्मप्राप्ति होती है।
190. मैं कर भूला मांड पिराणी। काचै कन्ध अगाजूं।
–हे प्राणी! तूं धोखे और वैभव में भूला हुआ है, नश्वर शरीर से बुरे–अकार्य करता है।
191. काचा कंध गले गल जायसै, बीखर जैला राजों।
–यह नाशवान शरीर क्षीण होते–होते नष्ट हो जाएगा तब तूं समस्त सांसारिक वैभव भूल जाएगा।
192. जाकै परसण बाजा बाजै। सो अपरम्पर काय न जपो हिंदू मुसलमानो।
–जिस अपरम्पर की महिमा प्रतिक्षण प्रतिभासित हो रही है, हे हिन्दुओं! हे मुसलमानों! उसे क्यों नहीं जपते।
193. डर डर जीव कै काजै।
–जीवात्मा के उद्धार के लिये बुरे कर्मों से डरो।
194. मरणत एको माघो।

–मृत्यु का मार्ग तो सबका एक ही है।
195. पशु मुकेरूं लहै न फेरूं, कहे ज मेरूं सब जग केरूं।
–मुक्त हुआ पशु भी फिर बन्धन में नहीं आना चाहता फिर तूं मनुष्य होकर भी जगत को अपना समझकर इसमें फंसाना चाहता है।
196. रिण छाणै ज्यूं बीखर जैला। तातै मेरूं न तेरूं।
–जंगल में पड़े हुए उपले के समान तूं बिखरकर नष्ट हो जाएगा, इसलिये यहां मेरी–तेरी करना व्यर्थ है।
197. विसर गया तै माघूं। रक्तूं नातूं सेतूं धातूं। कुमलावै ज्यूं शागूं।
–संसार के रिश्तों के मोह में तूं परमतत्व का मार्ग भूल गया है, ये रिश्ते–नाते तो एक दिन ताजे कटे हरे साग की भांति कुम्हलाकर नष्ट हो जाएंगे।
198. आडन पैंको रती बिसोवो सीझे नाही। ओ पिंड काम न काजूं।
–जब इस संसार से तुम्हारा जाना होगा तब यहां से तुम्हें जरा भी सहायता नहीं मिलेगी। यहां किया हुआ विश्वास रत्तीभर भी सिद्ध नहीं होगा, यहां तक की यह शरीर भी पराया हो जायेगा।
199. आवत काया ले आयो थो। जातै सूको जागो।
–संसार में आते समय तूं शरीर लेकर आया था पर जाते समय वह भी यहीं छोड़ना पड़ेगा।
200. भाग परापति कर्मा रेखां। दरगै जबला–जबला माघौ।
–कर्मो से ही भाग्य का निर्माण होता है। भगवद्प्राप्ति के अनेकों मार्ग है।
201. बिरखे पान झड़े झड़ जायला। तेपण तई न लागूं।
–वृक्ष से पत्ते एक बार झड़ जाने पर वे वापस उस पर नहीं लगते। भगवद्प्राप्ति के लिये मिला हुआ यह मनुष्य शरीर दोबारा नहीं मिलेगा।
202. भूला तेण गया रे प्राणी। तिहिं का खोज न माघूं।
–हे प्राणी! जो लोग भूल में भटकते हुए संसार से चले गए, उनका अनुसरण मत कर।
203. विष्णु–विष्णु भण लई न साई। सुर नर ब्रह्मा को न गाई।
–इस संसार से जाते समय अगर तुम्हारे पास विष्णु नाम जप की कमाई नहीं है तो आगे देवगण और ब्रह्माजी भी तुम्हारा पक्ष नहीं लेंगे।
204. जां जां शैतानी करै उफारूं, तां तां महतज फलियो।
–जब–जब दुष्ट लोग अहंकार के वशीभूत होकर अन्याय करते है, तब–तब परमात्मा की महिमा फलीभूत होती है।
205. मंडलीक कांय न जोयबा। इहिं धर ऊपर रत्ती न रहीबा राजूं।
–आप अनेक मंडलीक राजाओं को क्यों नहीं देखते? इस धरती पर उनकी रत्ती भर सत्ता भी शेष नहीं रही।
206. ऊमाज गुमाज पंज गंज यारी।
–उन्माद, अहंकार और पंचेन्द्रियों की विषय–वासनाओं से दूर रह। इनकी आसक्ति छोड़ दे।
207. रहिया कुपहीया शैतान की यारी।
–दुष्टों की संगति और कुपथ से दूर रह।
208. बे राही बे किरियावन्त, कुमती दौरे जायसै।
–महामलिन और दुष्कर्मी लोग नरक में जाएंगे।
209. नील मध्ये कुचील करबा, साध संगिणी थूलूं।
–दुष्ट लोग परमात्मा की लीला में विक्षेप करते हुए, साधु पुरूषों को दु:ख देते है।
210. पोहप मध्ये परमला जोती, यूं सुरग मध्ये लीलूं।
–सज्जन लोग संसार में फूल में सुगन्ध की भांति रहकर स्वर्गीय आनन्द उपस्थित कर देते है।
211. संसार में उपकार ऐसा, ज्यूं घण बरसंता नीरूं।
–संसार में इस प्रकार उपकार करना चाहिये जैसे बादल बिना किसी से कुछ चाहे भेदभाव से रहित होकर पानी बरसाते है।
212. संसार में उपकार ऐसा, ज्यूं रूही मध्ये खीरूं।
–स्वाभाविक प्रेम और सहज रूप से परोपकार की भावना हो तो रूधिर में से भी दूध की उत्पत्ति हो जाती है।
213. सोखा बाणू एक बखाणू। जाका बहु परवाणूं। निश्चय राखी तास बलूं।

–जिस भगवान ने महापराक्रमी रावण को मार दिया, उसकी महिमा बखान करने योग्य है, जो अनन्त है। हे प्राणी! तूं उसके बल का भरोसा रख।

214. राय विष्णु से बाद न कीजै। कांय बधारो दैत्य कूलूं।

–हे लोगों! भगवान से विमुख होकर क्यों दैत्यों के अवगुणों को अपना रहे हो?

215. सा पुरूषा की लच्छ कूलूं।

–सत्पुरूषों के लक्षण और गुण ग्रहण करो।

216. बैकुण्ठे विश्वास बिलम्बण। पार गिराये मात खिणूं।

–यदि कोई पूर्ण विश्वास से भगवद्प्राप्ति (बैकुण्ठ) के मार्ग पर लग जाये तो क्षणमात्र में उद्धार हो सकता है।

217. विष्णु–विष्णु तूं भण रे प्राणी। विष्णु भणन्ता अनन्त गुणूं।

–हे प्राणी! तूं विष्णु–विष्णु जप कर, विष्णु जप में अनन्त गुण है।

218. कृष्णी माया घन बरषंता। म्हे अगिणि गिणूं फूहारूं।

–भगवान की कृपा से बादलों से जो बरसात होती है, भगवान बरसात की उन बूंदों की भी गणना कर सकता है। असम्भव कार्य भी सम्भव कर सकता है।

219. राखण मता तो पड़दै राखां। ज्यूं दाहै पान बणासपती।

–भगवान यदि किसी की रक्षा करनी चाहे तो भयंकर शीतदाह में भी वनस्पति के पत्तों की तरह रक्षा कर सकते हैं।

220. यह कंवराई खेह रलाई। दुनियां रौले कंवर किसो।

–यह संसार की प्रभुता एक दिन मिट्टी में मिल जाएगी। वह सत्तावान किस काम का जो दुनियां का विनाश कर दे।

221. अरथूं गरथूं साहण थाटूं। धूंवै का लहलोर जिसो।

– यह धन–सम्पति और सेना, धुंध की लोर के समान है जो हवा का झोंका आते ही उड़ जाते हैं।

222. सो शारंगधर जप रे प्राणी। जिहिं जपिये हुवै धरम इसो।

–हे प्राणी! तूं भगवान विष्णु का जप कर, उसके जप से ही धर्म की प्राप्ति (अभिवृद्धि) होती है।

223. सास फुरंतै किवी न कमाई। तातैं जंवर बिन डसीरे भाई।

–हे प्राणी! अगर सांसो के रहते तूने सत्कर्म नहीं किया तो बड़ी भूल होगी क्योंकि मृत्यु तुम्हें एक दिन नष्ट कर देगी।

224. जंवरारै तैं जग डांडीला। देह न जीती जांणो।

–तूने शक्तिवान बनकर जगत को तो दण्डित किया किन्तु स्वयं की देह को नहीं जीत सका।

225. माया जाले ले जम काले। लेणा कोण समाणो।

–संसार एक मायाजाल है, यह नष्ट हो जाएगा, इसकी प्राप्ति को लेकर अहंकार कैसा?

226. काचै पिंडै किसी बड़ाई। भोलै भूल अयांणो।

–नश्वर शरीर की बड़ाई कैसी? अज्ञानी लोग इस भूल में ही भटकते रहते है।

227. दुनियां राचै गाजै बाजै। तामैं कणूं न दाणूं।

–दुनियां तो गाजे–बाजे से प्रसन्न रहती है किन्तु इसमें तत्व रूपी एक भी दाना सार नहीं है।

228. दुनियां के रंग सब कोई राचै। दीन रचै सो जाणी।

–दुनियां के रंग में तो सभी रंग जाते हैं पर जो धर्म के रंग में रंगता है उसे ही सच्चा जानना चाहिये।

229. काचा तोड़ै नीकुचा भाखै। अघट घटै मल माणो।

–सत्कर्महीन और कुकर्मी पुरुष नष्ट हो जाएंगे। पाप और अहंकार के कारण तो बड़े–बड़े शक्तिवानों का बल भी घट जाता है।

230. भूत परेती कांय जपीजै। यह पाखण्ड परमाणों।

–भूत–प्रेतों को क्यों जपते हो? ऐसा करना निश्चित रूप से पाखण्ड है।

231. सो अपरंपर कांय न जंपो। ततखिण लहो इमाणो।

–तुम उस परमात्मा का जप क्यों नहीं करते? उसका जप करने में क्षणमात्र भी देर मत लगाओ।

232. जइया मूल न सींच्यो। तो जामण मरण बिगोवो।

–जिसने मूल (परमतत्व) को नहीं खोजा, उसने लोक और परलोक दोनों गंवा दिये है।

233. कोई-कोई भल मूल सींची लो। भल तंत बूझीलो।
-कोई बिरले पुरुष ही इस परमतत्व को जानने और प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।
234. जा जीवन की विध जाणी। जीव तड़ा कछु लाहो होसी। मूवा न आवत हांणी।
-जिन्होंने जीवन-विधि को जान लिया है, उन्हें इस जीवन में भी लाभ होगा तथा मरणोपरांत आवागमन से मुक्त हो जाऐंगे।
235. हक हलालूं हक साच कृष्णों। सुकृत अहल्यो न जाई।
-हक जायज है, हक और सत्य से परमतत्व की प्राप्ति होती है, पुण्यकर्म कभी व्यर्थ नहीं जाते।
236. भल बाहीलो भल बीजीलो। पवणा बाड़ बलाई।
-शरीर का सदुपयोग करते हुए इससे सुकृत्य करो तथा विषय-वासनाओं से दूर रहो।
237. उनमुन मनवा जीव जतनकर। मन राखी लो ठांई।
-मन को पूर्णरूपेण स्थिर तथा उसकी वृत्तियों को अर्न्तमुखी करके जीवात्मा के उद्धार का यत्न करो।
238. कोई गुरु कर ज्ञानी तोड़त मोहा। तेरो मन रखवालो रे भाई।
-कोई समर्थ ज्ञानी गुरु ही संसार से मोह तोड़ अपने उपदेश से मन को स्थिर करा सकता है।
239. जो आराध्यो राव युधिष्ठिर, सो आराधो रे भाई।
-राजा युधिष्ठिर ने जिस सत्य और न्याय को धारण किया था, उसे तू भी कर।
240. निज पोह खोज पिराणी।
-व्यक्ति को आत्मतत्व की प्राप्ति का मार्ग खोजना चाहिये।
241. जे नर दावो छोड्यो मेर चुकाई। राह तेतीसों की जाणी।
-जिस मनुष्य ने 'मेरापन' और 'मैंपन' (ममता और अहंकार) का सर्वथा त्याग कर दिया है, उसने वस्तुतः मोक्षमार्ग को जान लिया है।
242. वेद कुराण कुमाया जालूं। भूला जीव कुजीव कुजाणी।
-पाखण्डियों ने वेद और कुरान के नाम पर जाल फैला रखा है तथा भूले-भटके लोगों को उस जाल में फंसा लेते हैं।
243. बसंदर नहीं नख हीरूं। धर्म पुरूष सिरजीवै पुरूं।
-अग्नि का प्रकाश हीरे की कान्ति की बराबरी नहीं कर सकता। पाखण्डियों का प्रकाश अग्नि की तरह प्रकट होकर शीर्घ ही नष्ट हो जाता है किन्तु धर्मात्मा पुरुष की कीर्ति चिरस्थायी रहती है।
244. दीन गुमान करैलो ठाली। ज्यूं कण घातै घुण हाणी।
-दूसरे के धर्म को नीचा कहना और अपने धर्म का अभिमान करना उस अनाज के घुन के समान है जो अन्दर से थोथा कर देता है।
245. साच सिदक शैतान चुकावो। ज्यूं तिस चुकावै पाणी।
-जैसे पानी प्यास को मिटाता है, वैसे ही सच्चाई और निश्छलता से दुष्ट वृत्तियों को मिटाना चाहिये।
246. मैं नर पूरा सरि विणजै हीरा। लेसी जांकै हृदय लोयण। अंधा रहा इवांणी।
-मैं पूर्ण पुरुष समराथल पर ज्ञान रूपी हीरों का व्यापार कर रहा हूँ, जिनके अन्तर्दृष्टि है, वे ही इनको लेंगे। अज्ञानी लोग तो अंधे के समान ही रहते हैं।
247. जंपो रे जिण जंपे लाभै। रतन काया ए कहांणी।
-हे भाई! विष्णु का जप करो, जप से ही आत्मोपब्धि होगी, केवल इस मनुष्य जन्म में ही तत्वप्राप्ति हो सकती है।
248. काही मारूं काही तारूं। किरिया बिहूंणा पर हथ सारूं।
-अत्यधिक दुष्ट लोगों को भगवान मारते हैं, साधु पुरुषों का उद्धार करते हैं सत्कर्मों से रहित पुरुष को भी जीवात्मा के कल्याण का अवसर मिलता है।
249. हरी कंकेहड़ी मंडप मैड़ी। जहां हमारा वासा।
-कंकेहड़ी आदि हरे वृक्षों के नीचे ही मेरा वास है।
250. चार चक नव दीप थरहरै। जो आपो परकासूं।
-यदि हम (श्री जाम्भोजी) अपने को पूर्ण रूप से प्रकाशित करें, तो चारों दिशाएं और नवों द्वीप थरथराने लगेंगे।
251. गुणियां म्हारा सुगणा चेला। म्हे सुगणा का दासूं।
-सुपात्र और गुणवान लोग ही मेरे शिष्य है और ऐसे गुणवानों की मैं सेवा करता हूँ।

252. सुगणा होय सैं सुरगे जास्ये। नुगरा रहा निरासूं।
–जो गुणवान है वो ही भगवद्प्राप्ति करेंगे। गुणहीन निराश ही रहेंगे।
253. जा का थान सुहाया घर बैकुण्ठे। जाय संदेसो लायो।
–सुपात्र लोगों का वास्तविक स्थान तो बैकुण्ठ है, उन्हीं को लेने के लिये मैं धरती पर आया हूँ।
254. जागो जोवो जोत न खोवो। छल जासी संसारूं।
–हे लोगों! जागो और आत्मतत्व को खोजो, जीवन ऐसे ही मत बिताओ। एक दिन संसार का वियोग हो जाएगा।
255. रे भल कृषाणी। ताकै करण न घातो हेलो।
–हे भाई! सुकृत्य करो और इसके लिये सदैव प्रयत्नशील रहो।
256. कड़वा मीठा भोजन भख ले। भखकर देखत खीरूं।
–रूखा–सूखा जैसा भी भोजन मिले, उसे खीर के समान उत्तम समझना चाहिये।
257. घर आखरड़ी साथर सोवण। ओढ़ण ऊना चीरूं।
–सोने के लिये धरती हो या बिछाना तथा ओढ़ने के लिये ऊनी वस्त्र हो या चिथड़ा, सबको समान समझना चाहिये।
258. जोगी रे तूं जुगत पिछाणी। काजी रे तूं कलम कुरांणी।
–हे योगी! तूं योग की युक्ति को पहचान! हे काजी! तूं कुरान की कलम (ज्ञान) को जान।
259. गऊ बिणासो काहे तानी। राम रजा क्यूं दीन्ही दानी। कान्ह चराई रनबे वांनी।
–तुम गाय की हत्या किसलिये करते हो? ऐसा करना ठीक होता तो भगवान राम उनको दान में क्यों देते? भगवान कृष्ण उनको निर्जन वन में क्यों चराते?
260. ध्याय रे मुंडिया पर दानी।
–हे जोगी! परमतत्व का ध्यान कर तथा प्राप्त ज्ञान का दान कर।
261. फीटा रे अण होता तानी। अलख लेखो लेसी जानी।
–जीव–हत्या अनुचित है, उससे दूर रहो, अन्त समय में परमात्मा कर्मों का हिसाब लेगा।
262. तन–मन धोइये संजम हुइये। हरष न खोइये।
–तन, मन दोनों को पवित्र रखते हुए संयमपूर्वक रहना चाहिये। किसी भी परिस्थिति में अपनी प्रसन्नता को खोना नहीं चाहिये।
263. ज्यूं–ज्यूं दुनियां करै खुंवारी। त्यूं–त्यूं किरिया पूरी।
–ज्यों–ज्यों दुनियां दुर्दशा करती है, त्यों–त्यों इससे विरक्ति और परमात्मा की तरफ आकर्षण बढ़ता जाता है।
264. मुग्धा सेती यूं टल चालो। ज्यूं खड़कै पात धनूरी।
–पास में जरा सी आवाज होने पर धनेर पक्षी उड़ जाता है, वैसे मूढ़ लोगों से बचकर रहना चाहिये।
265. सतगुरु होयबा सहजे चीन्हबा। जाचंध आल बखाणी।
–सतगुरु के मिलने पर सहज ही आत्म तत्व का ज्ञान हो जाता है पर सतगुरु के पर नाम पाखण्ड करने वाले कुछ लोग उस जन्म से अंधे व्यक्ति के समान है जिसने स्वयं संसार नहीं देखा पर इसका दूसरों को बखान करता है।
266. ओछी किरया आवै फिरियां। भ्रांती स्वर्ग न जाई।
–नींच कर्म करने वाले आवागमन के चक्कर में पड़े रहते है। भ्रान्ति में पड़े हुए मनुष्य को तत्व की प्राप्ति नहीं हो सकती।
267. हरि बिन देहरै जाण न पावै। अम्बाराय दवारूं।
–भगवान की कृपा के बिना बैकुण्ठ की प्राप्ति नहीं हो सकती।
268. कांय रे सींचो बनमाली। इंहि बाड़ी तो भेल पड़सी।
–इस शरीर को इतना क्यों सजाते–संवारते हो, एक दिन यह नष्ट हो जाएगा।
269. सुबचन बोल सदा सुहलाली। नाम विष्णु को हरे सुणो।
–सदा सुवचन बोलना चाहिये, एकदम जायज कमाई ही खानी चाहिये तथा प्रेमपूर्वक विष्णु नाम–स्मरण करना–सुनना चाहिये।
270. घण तण गड़बड़ कायों बायों। निज मारग तो बिरला कायों।
–अधिकांश लोग बुरे कर्मों में लिप्त है, कौओं की कांव–कांव के समान व्यर्थ की बातों में समय बर्बाद करते हैं। आत्मप्राप्ति के मार्ग पर तो कोई–कोई ही चलते हैं।

271. इस गढ़ कोई थीर न रहिबा। निश्चै चाल गया गुरु पीरूं।
–इस शरीर को एक दिन छोड़कर जाना ही पड़ता है। गुरु–पीर कोई भी इसे स्थिर नहीं रख सकते।
272. अलख–अलख तूं अलख न लखणा। तेरा अनन्त इलोलूं।
–हे परमात्मा! तूं अलक्ष्य है, हे प्रभु! तेरे गुण असंख्य है, तेरी गति अनन्त है।
273. कौण सी तेरी करणी पूजै। कौण सैं तिहिं रूप सतूलूं।
–ऐसा कौन है जो तेरी महिमा का पार पा सके? तेरे तुल्य और कौन है।
274. जो नर घोड़ै चढ़ै पाग न बांधै। ताकी करणी कौण बिचारूं।
–बड़ा होकर जो अपने पद के अनुरूप आचरण नहीं करता, उसकी करणी का क्या विचार किया जाए?
275. शुचियारा होयसी आय मिलसी। करड़ा दोजग खारूं।
–जो सच्चे लोग है वो मुझे प्राप्त होंगे। अहंकारी लोग दु:खी और दुर्दशाग्रस्त होते हुए नरक में जाएंगे।
276. जीव तड़े को रिजक न मेटूं। मूवां परहथ सारूं।
–मैं किसी जीव के जीते जी उसके कर्मों में हस्तक्षेप नहीं करता किन्तु मरने के बाद जीवात्मा को सम्भाल लेता हूँ।
277. मूंड मुंडायो मन न मुंडायो। मूहिं अबखल दिल लोभी।
–सिर मुंडवाकर साधु तो बन गए पर मन अभी तक वश में नहीं किया। मुंह से व्यर्थ बकवास करते हो और दिल में लोभ भरा है।
278. अन्दर दया नहीं सुरकाने। निंदरा हड़ै कसोभी।
–तुम्हारे अन्त:करण में दयाभाव नहीं है और श्रेष्ठ–पुरूषों की तुम मानते नहीं। निंदा और अशोभनीय कार्य तुम करते हो।
279. गुरु गति छूटी टोट पड़ैला।
–यदि तुम गुरु के उपदेश से विमुख हुए तो बहुत ही घाटे में रहोगे।
280. उनकी आवा एक पख सातो पै करणी हूंता खूंधा।
–जो पाखण्डी लोग है उनकी थोड़े दिन ही प्रतिष्ठा होती है, अन्त में वे अपनी करनी के कारण कष्ट पाते हैं।
281. गुरु प्रसाद काया गढ़ खोजो। दिल भीतर चोर न जाई।
–गुरु–कृपा से प्राप्त आदेश के अनुसार साधना करते हुए सावधान रहो ताकि काम–क्रोधादि विकार भीतर प्रवेश न पा सके।
282. थलिये आय सतगुरु परकाश्यो। जौ लै पड़ी लोकाई।
–संभराथल पर सतगुरु के ज्ञान का प्रकाश फैला हुआ है, उसमें आत्मतत्व की खोज कर लो।
283. दशरथ सो कोई पिता न देख्यो। देवलदे सी माई।
–दशरथ के समान पिता तथा देवकी के समान माता दूसरी नहीं हो सकती।
284. सीत सरीखी तिरिया न देखी। गरब न करीयो काई।
–कोई स्त्री अपने पातिव्रत्य धर्म का अहंकार न करे, क्योंकि इसमें सीता से बढ़कर कोई नहीं हो सकती।
285. हनमत सो कोई पायक न देख्यो।
–हनुमान के समान दूसरा कोई सेवक नहीं देखा गया है।
286. इहिं कलयुग में दोय जन भूला। एक पिता एक माई।
–कलियुग में मां और बाप दोनों ही भूल में है, वे सन्तान से सांसारिक सुख की कामना तो करते हैं पर उसके कल्याण की चिन्ता नहीं करते।
287. जुग जागो जुग जाग पिरारंणी। कांय जागंता सोवो।
–हे लोगों जागो। हे प्राणी जागो। जागते हुए क्यों सो रहे हो।
288. भलकै बीर बिगोवो होयसी। दुसमन कांय लकोवो।
–बिजली के चमकने जितनी देर में जीव इस शरीर से निकल जाएगा। काम–क्रोधादि अपने शत्रुओं को भीतर क्यों छिपा रखा है?
289. जंपो रे जिण जंप्यो जणीयर। जपसी सो जिण हारी।
–हे लोगों! जप करो, जप से ही उस परमात्मा को जाना जा सकता है। जो ध्यानपूर्वक खोजने वाला है, वही उसको जान पाएगा।
290. लह–लह दाव पड़ंता खेलो। सुर तेतीसां सारी।
–यह संसार माया का खेल है, इस खेल को तुम सावधानी पूर्वक खेलो ताकि इस मायाजाल से बाहर निकलकर वैकुण्ठ प्राप्ति हो जाए।
291. शील स्नाने संजमे चालो। पाणी देह पखाली।

–स्नानादि से शरीर को तथा शील से अन्त:करण को धोकर बाहर–भीतर से पूर्णत: पवित्र रहना चाहिये।
292. वस्तु पियारी खरचो क्यूं नांही। किहिं गुण राखो टाली।
–अपने प्यारे शरीर और धन को सत्कर्म में क्यों नहीं लगाते? किसलिये इनको बचाकर रखा है, एक दिन ये चले जायेंगे।
293. घर आगी इत गोवल बासो। कूड़ी आधो चारी।
–जीव का वास्तविक घर तो आगे वैकुण्ठ है, यहां गोवलवास मात्र है, यहां का आधोचार झूठा है।
294. ताण थकै क्यूं हार्‌यो नांही। मुरखा अवसर जोला हारी।
–मनुष्य जब समर्थ है तब सत्कार्य करता नहीं, असमर्थ होने पर चाहकर भी कर नहीं पाता।
295. जिहिं का उमग्या समाघूं। तिहिं पंथ के बिरला लागूं।
–परमतत्व का मार्ग आनन्दमय है, उस मार्ग पर बिरले ही लगते है।
296. कबही झूझत रायूं। पासै भाजत भायों। तातैं नुगरा झूझ न कीयों।
–मुक्ति चाहने वालों को अपने मन से जूझना पड़ता है। उन्हें संसार के आकर्षणों का त्याग करना पड़ता है। निगुरे व्यक्ति इस मार्ग पर नहीं चलते।
297. चोईस चेड़ा कालिंग केड़ा। अधिक कलावंत आयसै।
–कलियुग में अनेक प्रकार की तामसी साधना करने वाले पाखण्डी कलाबाज पैदा होंगे।
298. जाणत भूला महापापी। बहू दुनिया भोलायसै।
–जो लोग जान–बूझकर बुरे कर्म करते हैं, वे महापापी है। ऐसे लोग दूसरों को भी भूल में डालते हैं।
299. दिल का कूड़ा कुड़ीयारा। उपंग बात चलाय सै।
–(बाहर से उजले होने पर भी) कुछ लोग दिल से झूठे होंगे। वे लोग झूठी आधारहीन बातों का प्रचार करेंगे।
300. आप थापी महापापी। दग्धी परलै जायसै।
–स्वयं की पूजा करवाने वाले पाखण्डी लोग महापापी है। वे भयंकर नरकों में डाले जाएंगे।
301. छंदे मंदे बालक बुद्धे। कूड़े कपटे ऋध न सिद्धे।
–मनभावनी बातों से प्रसन्न होने वालों की बुद्धि बालक के समान होती है। झूठ और कपट से ऋद्धि–सिद्धि नहीं मिलती।
302. ध्यान न डोले मन न टले। अहनिश ब्रह्म ज्ञान उच्चरै।
–परमात्मा में अखण्ड ध्यान रखकर मन को वश में रखने वालों की जबान से हर समय ब्रह्म ज्ञान का उच्चारण होता है।
303. है कोई आछै मही मंडल शूरा। मनराय सूं झूझ रचायले।
–इस धरती पर ऐसा कोई शूरवीर है जो अपने मन से युद्ध करे?
304. अथगा थगायले। अबसा बसायले। अनबे माघ पाल ले।
–ऐसा कौन है जो भोगों से न तृप्त होने वाले मन को थकाकर बस में न आने वाले मन को बस में करके आवागमन से मुक्ति पा ले।
305. पढ़ वेद कुराण कुमाया जालों। दंत कथा जुग छायो।
–वेद और कुरान के नाम पर पाखण्ड फैला हुआ है। इनके नाम पर दन्त कथाऐं प्रचलित है पर इनके तत्व को बहुत कम लोग ही जानते हैं।
306. सिध साधक को एक मतो। जिन जीवत मुक्त दृढ़ायो।
–जीवन मुक्ति की प्राप्ति का दृढ़ निश्चय करने वाले सभी साधक एक ही मत है।
307. क्यूं–क्यूं भणता। क्यूं–क्यूं सुणतां। समझ बिना कुछ सिद्धि न पाई।
–पढ़ने और सुनने मात्र से कुछ नहीं होगा, बिना उचित समझ के सिद्धि नहीं मिल सकती।
308. ओ३म् आद सबद अनाहद बाणी।
–ब्रह्माण्ड में व्याप्त आदि शब्द 'ओ३म्' है, वही पिण्ड में अनाहत नाद के रूप में गूंजायमान है।
309. चवदै भवण रहया छल पाणी। जिहिं पाणी से इंड ऊपना।
–सृष्टि–निर्माण से पूर्व चौदहों भुवनों में पानी ही पानी था। उस पानी से अण्डे (हिरण्यगर्भ) की उत्पत्ति हुई।
310. सहस्र नाम सांईभल शिंभु। म्हे उपना आदि मुरारी।
–उस निराकार परमात्मा के हजारों नाम है। वह सगुण रूप में प्रकट होता है तो मुरारी आदि नाम धारण करता है।
311. नरसिंघ रूप धर हिरण्यकश्यप मार्‌यो। प्रहलादो रहियो शरण हमारी।

–प्रहलाद मेरी शरण में था, अत: नरसिंह रूप धारण करके मैनें हिरण्यकश्यपु का वध किया।

312. शेष जम्भराय आप अपरंपर। अवल दिन से कहियो।

–इस बार आदि–अनादि अपरम्पर विष्णु ही जाम्भोजी के रूप में है।

313. बाद–विवाद फिटाकर प्राणी। छाड़ो मनहट मन का भाणो।

–हे प्राणी! वाद–विवाद और बकवाद से दूर रह। मनहठ और अहंकार छोड़ दे।

314. नुगरा कै मन भयो अंधेरो। सुगरा सूर उगाणो।

–निगुरों के मन में अज्ञानांधकार है और सुगरों के मन में ज्ञान का सूर्योदय हुआ है।

315. चरण भी रहिया लोयण झूरिया। पिंजर पड़यो पुराणो।

–वृद्धावस्था में व्यक्ति असहाय हो जाता है, पैर चलने–फिरने तथा आंख देखने से इन्कार कर देती है। ऐसी अवस्था में भजन नहीं होता।

316. जीवड़ा नै पाछो सूझण लागो। सुकरत नै पछताणो।

–धर्मराज के पास पहुंचने पर जीव को समझ में आएगा और वह इस लोक में सुकृत न करने के लिये पछताएगा।

317. विष्णु–विष्णु तू भण रे प्राणी! जो मन मानै रे भाई।

–हे भाई! यदि तेरा मन माने, तो विष्णु–विष्णु जप कर।

318. दिन का भूला रात न चेता। कांय पड़ा सूता आस किसी मन भाई।

–दिन–रात भ्रम और भूल में पड़ा निश्चिन्त क्यों सोता रहा, तेरे मन में किस की आशा है।

319. तेरी कूड़ काची लगवाड़ घणो छै। कुशल किसी मन भाई।

–तेरा शरीर नश्वर है और झंझट अनेक है, ऐसे में हे भाई! तेरी कुशल कैसी?

320. हिरदै नाम विष्णु को जंपो। हाथे करो टवाई।

–हृदय में तो विष्णु का नाम जपो और हाथों से कार्य करो।

321. पाहन प्रीत फिटा कर प्राणी। गुरु बिन मुक्त न जाई।

–हे प्राणी! तूं पत्थर पूजा का प्रेम छोड़, बिना गुरु ज्ञान के मुक्ति नहीं मिल सकती।

322. पंच क्रोड़ी ले प्रहलाद उतरियो। जिन खरतर करी कमाई।

–भक्त प्रहलाद ने बहुत ही श्रेष्ठ कमाई की क्योंकि उन्होंने पांच कोटि जीवों के साथ मुक्ति प्राप्त की थी।

323. सात क्रोड़ी ले राजा हरिचन्द उतरियो। तारादे रोहिताश हरिचन्द हाटोहाट बिकाई।

–महाराजा हरिश्चन्द्र ने सात कोटि जीवों के साथ मुक्ति प्राप्त की इस हेतु उन्हें अपनी पत्नी तारादे और पुत्र रोहिताश्व के साथ काशी के बाजार में बिकना पड़ा।

324. कृष्ण करंता बार न होई। थल सिर नीर निवाणो।

–उस परमात्मा को किसी कार्य को करने में देर नहीं लगती। वह रेत के धोरे पर जल से भरा तालाब बना सकता है।

325. भूला प्राणी विष्णु जंपो रे। ज्यूं मौत टलै जिरवाणो।

–हे भूले हुए प्राणी! विष्णु का जप करो जिससे मृत्यु और आवागमन से छुटकारा मिले।

326. भीगा है पण मेघा नाहीं। पांणी मांहि पखाणो।

–अन्त:करण को शुद्ध न करके लोक दिखावे के लिये ज्ञान की बातें करने वाले उस पत्थर के समान है जो पानी में पड़े रहने के बाद भी अन्दर से सूखा रहता है।

327. जीवत मरो रे जीवत मरो। जिन जीवन की बिध जाणी।

–जीते जी मरो–जीवन मुक्ति प्राप्त करो, जो जीने की सही विधि जानता है, वही ऐसा कर सकता है।

328. जे कोई आवै हो हो कर। आप जै हुईये पांणी।

–यदि कोई व्यक्ति अत्यन्त क्रोधित होकर आता है, तो अपने को पानी के समान शीतल और विनम्र होना चाहिये।

329. जाकै बहुती नवणी बहुती खवणी। बहुती क्रिया समाणी।

–अत्यन्त विनम्र, अत्यन्त क्षमाशील तथा सभी प्रकार के कार्यों को धैर्यपूर्वक समभाव से करें।

330. यह मढ़ देवल मूल न जोयबा। निज कर जपो पिराणी।

–मढ़ियों और देवालयों में परमात्मा को खोजने की जरूरत नहीं है। हे प्राणी! अपनी सामर्थ्यानुसार विष्णु का जप करते रहो।

331. अनन्त रूप जोवो अभ्यागत। जिहिंका खोज लहो सुर बाणी।
–अनन्त रूप धारण किये हुए सर्वत्र परमात्मा ही मौजूद है। ज्ञानी पुरुषों के बताये हुए मार्ग पर चलकर उसकी खोज करो।
332. साच सही म्हे कूड़ न कहिबा। नेड़ा था पण दूर न रहीबा।
–मैं सत्य और सही बातें करता हूँ, मिथ्या भाषण नहीं करता। परमतत्व रूप में मैं प्रत्येक प्राणी के अन्दर हूँ, उससे दूर नहीं हूँ।
333. तज्या अलिंगण तोड़ी माया, तन लोचन गुण बांणो।
–वही सिद्धी प्राप्त कर सकता है, जिससे सांसारिक आकर्षणों, माया के बन्धनों को तोड़ दिया। उसे शरीर की भी आवश्यकता महसूस नहीं होता।
334. अर्थू गर्थू साहण थाटूं। कूड़ा दीठो ना ठाटो।
–धन–सम्पत्ति, साधन इत्यादि सांसारिक वैभव झूठा है, इसके कारण अपनी शान–शौकत मत समझो।
335. कूड़ी माया जाल न भूली रे राजेन्द्र अलगी रही ओजूं की बाटों।
–यह जगत का ऐश्वर्य झूठा माया जाल है। मुक्ति का मार्ग इससे अलग है।
336. ऊँचे नीचे करै पसारा। नाहीं दूजै का संचारा।
–मनुष्य को विशेष प्रयत्न करके अपने अन्त:करण को निर्मल बनाना चाहिये। यह कार्य दूसरा कोई नहीं कर सकता उसे स्वयं ही करना पड़ेगा।
337. तिल में तेल पहुप में बास। पांच तत्व में लियो प्रकास।
–जैसे तिलों में तेल और फूलों में सुगन्ध होती है। वैसे पंचतत्व निर्मित इस देह में यह जीवात्मा प्रकाशित है।
338. बिजली कै चमकै आवै जाय। सहज शून्य में रहै समाय।
–देह में आत्मा का आना–जाना बिजली की चमक के समान क्षणमात्र में होता है। जीवात्मा हृदय–गगनमंडल में समाहित है।
339. नै यो गावै न यो गवावै। सुरगे जाते बार न लावै।
–तत्वप्राप्त पुरुष तत्व के विषय में न तो किसी से कहता है और न सुनता है। वह मुंह, नैत्र और कान से मौन हो जाता है तथा शीघ्र ही मुक्ति प्राप्त कर लेता है।
340. सतगुरु ऐसा तंत बतावै। जुग जुग जीवै बहुर न आवै।
–ऐसा सतगुरु अगर किसी तत्व का रहस्य बता दे तो वह जीवन मुक्त हो जाता है उसे आवागमन से छुटकारा मिल जाता है।
341. धरर्म हुवै पापां छूटीजै। हरि पर हरि को नाम जपीजै।
–निरंतर हरि नाम स्मरण करते हुए तू धर्म–कर्म कर, ऐसा करने से तू पाप–बन्धन से मुक्त हो जायेगा।
342. हरियालो हरि आण हरूं। हरि नारायण देव नरूं।
–दूसरे जीव–पदार्थों में प्रत्येक जगह परमात्मा को देख। सर्वत्र हरि विराजमान है।
343. आशा सास निरास भईलो। पाईलो मोक्ष दवार खिणूं।
–अन्त समय में भी अगर तेरी प्रत्येक जीव में परमात्मा को देखने की दृष्टि हो जाये तो उसी क्षण तुझे मोक्ष–प्राप्ति हो सकती है।
344. देखि अदेख्या सुण्या असुण्या। क्षमारूप तप कीजै।
–बुरा देखकर अनदेखा करना चाहिये, बुरी बात सुनकर अनसुनी करनी चाहिये तथा क्षमारूपी तप करना चाहिये।
345. थोड़े माहि थोड़ेरो दीजै। होते नाहिं न कीजै।
–अपने पास अगर थोड़ी वस्तु है तो मांगने पर उसमें से थोड़ी दे देनी चाहिये। होते हुए साफ मना नहीं करना चाहिये।
346. कृष्णी मया तिहूं लोका साक्षी। अमृत फूल फलीजै।
–तीनों लोकों में सर्वत्र परमात्मा विराजमान है, उसे साक्षी मानकर शुभ कर्म करते हुए परमतत्व की प्राप्ति करनी चाहिये।
347. जोय जोय नांव विष्णु के दीजै। अनन्त गुणा लिख लीजै।
–भगवद्‌र्पण करके दिया हुआ दान अनन्त होकर मिलता है।
348. मानूं एक सुचील सिनानूं।
–भीतर और बाहर की मन और तन की पवित्रता बड़े से बड़े दान से भी श्रेष्ठ है।
349. आप अलेख उपन्ना शिंभु। निरह निरंजन धंधूकारूं।
–अगोचर स्वयंभू अपने आप ही उत्पन्न हुआ है। सृष्टि निर्माण से पूर्व निराकार निरंजन था और धुंधलेपन की स्थिति थी।

350. नर निरहारी एकलवाई। जिन यो राह फुरमाई।
–मैं विष्णु हूँ, मैं निराहारी हूँ और केवल वायु के सहारे ही रहता हूँ, मैनें यह मार्ग बताया है।
351. जोर जरब करद जे छोड़ो। तो कलमा नाम खुदाई।
–किसी निरीह जीव पर शक्ति मत अजमाओ, उन पर चोट मत करो और उनको मारने के लिये धारण की हुई छुरी को छोड़ो, तभी तुम धर्म के मूल तत्व को पहचान पाओगे।
352. जिनकै साच सिदक इमान सलामत। जिण यो भिस्त उपाई।
–जिनके हृदय में न्याय, सच्चाई और ईमान मौजूद हैं, उनको ही स्वर्ग प्राप्ति होती है।
353. सहजे शीले सेज बिछायों। उनमन रहया उदासूं।
–जिसमें जीवात्मा की अमरता तथा शरीर और संसार की नश्वरता को पहचान लिया है, जो शीलवान है, जिसका मन स्थिर है, उसी को आत्मतत्त्व की प्राप्ति होती है।
354. रवि उगा जब उल्लू अन्धा। दुनियां भया उजासूं।
–सूर्योदय होने पर दुनियां में तो प्रकाश हो जाता है किन्तु उल्लू को दिखाई नहीं देता। दुनियां के बहुत से लोग ऐसे ही है जो सत्य को बताने वाला सतगुरु सामने होने पर भी पहचान नहीं पाते।
355. जां जांण्यो तहां प्रवाण्यो। सहज समाणो। जिहिं के मन की पूगी आसूं।
–जिन्होंने सतगुरु को जाना है और विश्वास किया है, उन्हें ही आत्मस्वरूप के दर्शन हुए हैं तथा उनके मन की आशाएँ भी पूर्ण हुई है।
356. सत संतोष दोय बीज बीजीलो। खेती खड़ी अकासी।
–सत्य और संतोष को धारण करके शून्यमण्डल में साधना करो।
357. चेतन रावल पहरै बैठे। मृगा खेती चर न जाई।
–परिश्रम पूर्वक की गई साधना रूपी खेती को मन रूपी मृग चर न जाए इसलिये हर समय सचेत रखने वाले चैतन्य राजा जीवात्मा के पहरे में रहो।
358. गुरु प्रसादे केवल ज्ञाने, ब्रह्म ज्ञाने सहज स्नाने।
–गुरु की कृपा से साधक को ब्रह्मज्ञान की कैवल्य अवस्था प्राप्त होती है, जिसमें आत्मतत्त्व का बोध हो जाता है।
359. देखत भूली को मनमानै। सेवै बिलोवै बाझ सनानै।
–हे भाई! दूसरों की देखादेखी और मनमानी करना भूल है। पानी से स्नान तो किया जा सकता है पर उसे बिलौने पर घी नहीं निकलता।
360. देखत भूली को मन चेवै। भीतर कोरा बाहर भेवै।
–दूसरों की देखादेखी जो मनमानी करते हैं वे बाहरी दिखावा तो कर लेते हैं पर भीतर से खाली होते हैं।
361. देखत भूली को मन मानै। हरि परहरि मिलियो शैताने।
–जो परमात्मा को छोड़कर, दुष्टों की संगति और दुष्कर्म करता है, यह दूसरों की देखादेखी और मनमानी का ही परिणाम है।
362. कवले चूकी बचने हारी। जिहिं औगुण ढ़ांची ढ़ोवै पांणी।
–गर्भवास में परमात्मा को सुकृत करने के दिये वचन को हारने के बाद जीवात्मा को अगले जन्म में पशु बनकर कष्टसाध्य कार्य करने पड़ते हैं।
363. विष्णु कूं दोष किसो रे प्राणी। आपे खता कमाणी।
–हे प्राणी! इसमें विष्णु का क्या दोष है? अपने किये हुए पाप कर्मों का फल तो भुगतना ही पड़ेगा।
364. कृत खेत की सींव मैं लीजै। पीजै ऊंडा नीरूं।
–हमें हक की कमाई खानी चाहिये तथा पानी स्वच्छ पीना चाहिये।
365. भोलब भालब। टोलम टालम। ज्यूं जाणो त्यूं आणो।
–भूले-भटके लोगों की टोलियों की टोलियां ही आवागमन के चक्कर में पड़ी है।
366. जांका जन्म नहीं पर कर्म चंडालूं। और कूं जिभै कर आप कूं पोखणा।
–जो अपना पेट भरने के लिये दूसरे जीवों की हत्या करते हैं, वे उच्च कुल में जन्म लेने के बाद भी कर्म से हीन (चाण्डाल) है।
367. उरका फुरका निवाज फरीजां। खासा खबर बिनाणी।
–कुरान शरीफ के अनुसार मुसलमान का यह कर्त्तव्य है कि वह नमाज को हृदय में धारण करके उस पर अमल करे। इससे उसको

सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रहस्य का पता चलेगा।

368. चांदणै थकै अंधैरै क्यं चालो। भूल गया गुरु बाटो।

–गुरु ज्ञान रूपी प्रकाश के होते हुए तुम अज्ञानांधकार में क्यों चल रहे हो? क्या गुरु के बताये हुए मार्ग को भूल गए।

369. नीर थकै घट थूल क्यूं राखो। सबल बिगोवो खाटो।

–गुरु ज्ञान रूपी जल के रहते हुए तुम अपने हृदय रूपी घड़े को खाली लिये क्यों बैठे हो? यह मनुष्य जन्म दुर्लभ है इसे व्यर्थ में नष्ट मत करो।

370. बिन्दो ब्योहरो ब्योर विचारो। भूलस नाहीं लेखो।

–आत्म चिन्तन करते हुए अपने पापकर्मों का प्रायश्चित करो। इन्हें कभी भूलो नहीं इनका हिसाब रखो।

371. नदिये नीरूं सागर हीरूं। पवणा रूप फिरै परमेश्वर।

–परमात्मा अनेक रूपों में सर्वत्र विद्यमान है, नदियों में नीर रूप में, सागर में रत्न रूप में तथा हवा के रूप में वह सब जगह है।

372. ते सरवर कित नीरूं। गहर गंभीरूं। खिण एक सिद्धपुरी विश्राम लियों।

–परमतत्व गूढ़-गम्भीर है। वह सरोवर कहाँ हैं जहाँ यह परमतत्त्व रूपी ल मिलता है? एक क्षण के लिये ही सही अपने-आप में स्थित होकर देखो।

373. अब जु मंडल भई अवाजूं। म्हे शून्य मंडल का राजूं।

–हृदय में निरन्तर अनाहत नाद की ध्वनि गुंजरित होती रहती है। जीवात्मा का इसी शून्य मंडल में वास है।

374. जोग जुगत की सार न जाणी। मूंड मुंडाया बिगूता।

–हे जोगी! तुम जोग और उसकी साधना के बारे में कुछ भी नहीं जानते, मुंड मुंडाकर भी भ्रम में पड़े हुए हो।

375. चेला गुरु अपरचै खीणा। मरते मोक्ष न पायो।

–बिना आत्मज्ञान के गुरु और चेला दोनों ही नष्ट हो जाएंगे और मरणोपरांत उन्हें मोक्ष भी नहीं मिलेगा।

376. विष्णु-विष्णु तूं भण रे प्राणी। पैंके लाख उपाजूं।

–हे प्राणी! तूं निरन्तर विष्णु का जप कर, जैसे पाई-पाई करके लाखों रुपये एकत्र हो जाते हैं वैसे ही निरन्तर विष्णु जप से अनन्त पुण्य संचित हो जाते हैं।

377. विष्णु विष्णु तूं भण रे प्राणी। इस जीवन कै हावै।

–इस जीवन के भले के लिये, हे प्राणी। तूं निरन्तर विष्णु-विष्णु जप कर।

378. क्षण-क्षण आव घटंती जावै। मरण दिनों दिन आवै।

–क्षण-क्षण करके तेरी आयु घटती जा रही है और मृत्यु नजदीक आ रही है।

379. ज्यूं-ज्यूं लाज दुनी की लाजै। त्यूं-त्यूं दाब्यो दावै।

–भगवद्प्राप्ति के इस मार्ग पर लगने के बाद तुझे दुनियां की लोक-लज्जा से नहीं डरना चाहिये वरना तो दुनियां तूझे और दबाएगी और दु:ख देगी।